पोएली सेनगुप्ता

मेरा भाई और मैं

मुखपृष्ठ से आगे ...

आसमान काले से और काला होता जा रहा था। जैसे कोई उसको काली चादर ओढ़ा रहा है। सूरज बुझ गया था। गर्मी कुछ कम हो रही थी। पर अब भी किसी भी चीज़ में कोई हरकत नहीं थी। आज का दिन तो जैसे रुकी हुई घड़ी हो गया था। अचानक मुझे कुछ सुनाई दिया। आवाज़ बहुत फीकी, बहुत धीमी थी। जैसे कोई बच्चा नींद से जाग रहा हो। आवाज़ कुछ और तेज़ हुई। जैसे दूर से कोई रेलगाड़ी सीटी देती आ रही हो। फिर तो आवाज़ इस तरह तेज़ हुई कि लगा हम रेल में ही बैठे हों और सीटी बजाते हुए वह किसी सुरंग से गुज़र रही हो, ...हू ऽऽ... हू ऽऽऽ...! लेकिन मेरे भाई ने कुछ नहीं सुना। हवा पेड़ों पे दिखने लगी थी। पेड़ों की मुण्डियाँ नर्तकों की तरह मटक रही थीं। और मेरा भाई अपलक उन्हें निहार रहा था। हू ऽऽ... हू ऽऽऽ... हवा गुनगुनाने लगी थी।

मैंने उँगलियों से सीटी बजाई और रेल का इंजन बन गई। फी ई...फी ई....। मेरे भाई ने एक बार भी मुड़कर नहीं देखा। लेकिन अम्मी वहाँ आ गई, "अरी रेल की बच्ची इतना शोर क्यों मचा रही है? क्या हुआ?"

"अरी बच्ची की अम्मी, आकर देखो। बारिश आने वाली है।" मैं बोली। वह मुस्कुराई और हम दोनों को गले लगा लिया। उनकी आँखों में खुशी थी तो हल्की-सी उदासी भी थी। आज मैं कुछ खास चीज़ पका रही हूँ यह कहते हुए वे रसोई में चली गईं।

अबकी बार तो एक अजब आवाज़ आई। बिल्कुल वैसे जैसे कोई दस्तक दे रहा हो – खट खट...खट खट... कोई है? मेरे भाई को आवाज़ सुनाई नहीं दी। वह तो हाथी के बड़े-बड़े कानों की तरह हिलते-डुलते पेड़ों को देख रहा था। थोड़ी देर में खट-खट की यही आवाज़ सैंकड़ों घोड़ों के सड़क पर दौड़ने की आवाज़ हो गई – टप टप टप ... टप। मैं इस आवाज़ की नकल उतारने लगी। पर घोड़े तो दौड़ते हुए हिनहिनाते भी हैं। मैं बीच-बीच में हिनहिनाना भी देती। वी ही ई ही... वी ही ई ही... पर मेरे भाई को यह कहाँ सुनाई देता है? वो तो खिड़की से सिर टिकाए झमाझम बारिश को देख रहा था। रह रहकर मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू आ रही थी। मेरे भाई ने लम्बी साँस भरी और मुस्कुराने लगा।

लग रहा था जैसे हाथी-घोड़े सब आपस में मिल गए हों। हाथी अपनी सूँड उठाए, कान फड़फड़ाते हुए नाच रहे थे। घोड़े भी नाच रहे थे। और तो और पेड़-पत्तियाँ, हवा, बारिश, हर कोई नाच-गा रहा था। और मेरा भाई खिड़की से उन सबका नाच देख रहा था।

अचानक ही वो कूदा और मुझे दरवाज़े तक खींच ले गया। बाहर हमारे दोस्त दौड़ते-चिल्लाते बारिश में नाच रहे थे। मैं और मेरा भाई भी भागे। हमारे सिर गीले हो गए थे। बाल बिखरकर माथे पर आ गए थे और हमारी आँख, कान, मुँह सब में पानी भर गया था। हम पानी भरे गड्ढों में उछल-कूद मचा रहे थे। ज़मीन पर फिसलन हो गई थी। हम कूदते तो छपाक की आवाज़ होती। गीली मिट्टी हमारे पाँवों की उँगलियों के बीच से उचकी आ रही थी। हमारे दोस्त चीखते-चिल्लाते, हाथ हिला-हिलाकर नाचते हुए हमारा नाम ले रहे थे।

लेकिन मेरे भाई ने उनका बुलाना नहीं सुना। उसे तो अपना नाम भी नहीं पता। उसके कानों में बादल भरे थे। उसने न तो कभी माँ से लोरी सुनी है और न पापा से कहानी। वो न सुबह-सवेरे चिड़ियों का चहचहाना सुन सकता है और ना ही उसे हवा की सरसराहट का पता चलता है। उसने कभी नहीं सुनीं वो सारी आवाज़ें जो मैं निकालती हूँ – वो चीखती-सी रेल की, सड़क पर सरपट दौड़ते घोड़ों की, पेड़ों पर झरने-सी गिरती बारिश की आवाज़ें! जैसे मस्ताए हाथियों का झुण्ड नाच रहा हो! वो ना सुन सकता है, ना बोल सकता है। उसके कानों में सन्नाटा भरा है तो उसकी जुबाँ कैसे बोले?

वो जो बारिश लाता है, जिससे हवाएँ चलती हैं, जिससे ये पूरी दुनिया है, क्या वो गाना सुनने में मेरे भाई की मदद नहीं करेगा?